अध्याय दूसरा

'गोदान' में किसान का चित्रण

' गोदान ' में किसान का चित्रण —

प्रेमचंदजी किसान को समाज का प्रमुख उत्पादन करनेवाला अंग मानते हैं। उनके लिए किसान का विकास ही देश का विकास है और किसान की दुरावस्था ही देश की दुरावस्था है। किसान के जीवन पर ही देश के अन्य वर्गों का जीवन निर्धारित होता हैं। प्रेमचंदजी ने ' गोदान ' में किसान को केन्द्र बनाकर सारे समाज का चित्रण किया है। प्रेमचंदजी ने भारतीय समाज को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वर्गों में विभाजित किया हैं। किसानों का कुछ वर्गों से केवल आर्थिक सम्बन्ध होता है तो कुछ वर्गों से आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक सम्बन्ध होता है। किसान इन सम्बन्धों को कठिनता के साथ निबाहता है। प्रेमचंदजी ने इसे अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। इस सम्बन्ध में डॉ.ह.के.कडवे कहते हैं कि ' गोदान प्रेमचंद का यथार्थवादी परम्परा का सुविख्यात श्रेष्ठ उपन्यास है। उपन्यास की पार्श्वभूमि ग्रामीण जन-जीवन अर्थात किसान-जीवन की है। प्रेमचंद ने किसानों के साथ-साथ गाँव के प्राय: सभी प्रातिनिधिक पात्रों का सफलता से चरित्र-चित्रण किया है। उत्तर प्रदेश के विशेषकर अवध के ग्रामीण परिसर में स्थित किसान जीवन का सम्पूर्ण चित्रण लेखक का प्रधान उद्देश्य है।'[१]

भारतीय किसान जन्म से संघर्ष करता आ रहा है। इस संघर्ष का मूल समाज का विभिन्न वर्गों में विभाजित होना है ऐसा डॉ.बदरी प्रसाद मानते हैं - ' प्रेमचंद की यथार्थवादी कथा-कृति ' गोदान ' में उनके प्रगतिशील विचारों के दर्शन अनेकत्र होते हैं। इसमें भारतीय किसान की संघर्षमयी गाथा प्रस्तुत की गई है, जिसमें शोषण के विविध रुप उपलब्ध होते हैं। इस शोषण की भयंकरता के

---

१ डॉ.ह.के.कडवे : हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति -पृ.२१४
अन्नपूर्णा प्रकाशन,१०६ । १५४,गाँधीनगर,कानपुर-१२,
प्रथम संस्करण - १९७८

कारण इसकी कथा हिन्दुस्तान के किसानी जीवन की करुण कथा बन गई है। वर्ग-वैषम्य तथा शोषण और उत्पीडन की घटनाओं ने लोकजीवन के वर्ग-संघर्ष और वर्ग-चेतना को उभरने के अवसर दिए हैं।`[१]

गाँवों में बसनेवाले किसानों का सभी वर्गों से सम्बन्ध होता है परंतु जमींदार और किसानों का सम्बन्ध तो बेजोड होता है ऐसा डॉ.पीताम्बर सरोदे मानते है --` भारत की आत्मा गाँवों में रहती है, इस बात से प्रेमचंद सहमत रहे अपितु इसके हिमायती भी थे। उन्होंने गाँवों को देखा था और गाँवों में रहनेवाले किसानों को देखा था। जिस आत्मियता और अंतरंगी भूमिका से उन्होंने भारत के किसानों के रुप को देखा था वह केवल बेजोड है। किसानों का विचार करते समय उनके जीवन पर जोंक से चिपके जमींदारों का वर्णन अत्यंत स्वाभाविक था।`[२]

- किसान - जमींदार --

प्रेमचंदजीने दिखाया है कि एक वर्ग के दूसरे वर्ग के साथ होनेवाले सम्बन्ध स्पष्ट नहीं हैं, परंतु कई स्तरों और रुपों में सम्बन्धों की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। `गोदान` में किसान और जमींदार के सम्बन्धों का चित्रण अधिक हुआ है। डॉ.पीताम्बर सरोदे किसान और जमींदार का वास्तविक वर्णन इसप्रकार करते है -- ` मेहनत करनेवाला अपनी मर्यादा के रक्षा के हित अनेकानेक कष्ट उठानेवाला होरी भारतीय कृषक का सच्चा प्रतीक है। मर्यादा की रक्षा में पागल-सा लगा हुआ होरी मजदूरी कर अपने जीवन को ही होम देता रहा, वह भारत के भूखे किसानों का नग्नचित्र है। अन्न पैदा करके भी वह भूखा है, कपास उगाकर भी वह नंगा है।

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद : प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६४
आम प्रकाशन,३०-बी,केवल पार्क एक्सटेंशन,
आजादपुर,दिल्ली,प्रथम संस्करण-१९८७

२ डॉ.पीताम्बर सरोदे : आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना, पृ.६३,अतुल प्रकाशन १०७/२९५ ब्रह्मनगर,कानपुर-१२,संस्करण - जून १९८७

जमींदार मजे लूट रहे हैं। ऐश कर रहे हैं।'[१]

जमींदार किसान का शोषण करता है। उसे अपनी आज्ञा मानने के लिए विभिन्न तरीकों से विवश करता है। यह आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्ध है। लेकिन किसान - जमींदार में केवल यही सम्बन्ध नहीं है।' गोदान' में प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि रायसाहब अमरपालसिंह एक दिन होरी को बैठाकर अपनी निजी पीड़ाओं को सुना रहे हैं --

' दुनिया समझती है, हम बड़े सुखी हैं। हमारे पास इलाके, महल, सवारियाँ, नौकर-चाकर, कर्ज, वेश्याएँ, क्या नहीं है, लेकिन जिसकी आत्मा में बल नहीं, अभिमान नहीं, वह और चाहे कुछ हो, आदमी नहीं है। जिसे दुश्मन के भय के मारे रात को नींद न आती हो, जिसके दु:ख पर सब हँसें और रोनेवाला कोई न हो, जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो, जो भोग-विलास के नशे में अपने को बिलकुल भूल गया हो, जो हुक्काम के तलवे चाटता हो और अपने अधीनों का खून चूसता हो, उसे मैं सुखी नहीं कहता। वह तो संसार का सबसे अभागा प्राणी है।'[२]

इस समय रायसाहब और होरी का सम्बन्ध अत्यंत आत्मिय और मानवीय लगता है। यह सही है कि इस आत्मीयता में रायसाहब का स्वार्थ छिपा हुआ है, लेकिन इससे यह प्रकट होता है कि रायसाहब और होरी के बीच सम्प्रेषणहीनता की स्थिति नहीं है।

प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि जमींदार के यहाँ होनेवाले प्रत्येक सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव में किसान हिस्सा लेते हैं। इस अवसर पर किसानों का भेंट

---

१ डॉ.पीताम्बर सरोदे : आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६३
अतुल प्रकाशन १०७। २९५ ब्रह्मनगर, कानपुर-१२
संस्करण - जून १९८७

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१५, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

के रुपमें आर्थिक शोषण होता है। रायसाहब सकेत के तौरपर होरी से कहते है -` लेकिन असामी जितने मन से असामी की बात सुनता है, कारकुन की नहीं सुनता। हमें इन्हीं पाँच-सात दिनों में बीस हजार का प्रबन्ध करना है। कैसे होगा, समझ में नहीं आता। तुम सोचते होगे, मुझ टके के आदमी से मालिक क्यों अपना दुखडा ले बैठे। किससे अपने मन की कहूँ ? न जाने क्यों तुम्हारे ऊपर विश्वास होता है।`[१]

`गोदान` में रायसाहब ने रामलीला का आयोजन किया और शगुन के रुपमें असामियों से रुपये वसूल करना चाहा। ` तुम अब जाओ होरी, अपनी तैयारी करो। जो बात मैंने कही है, उसका ख्याल रखना। तुम्हारे गाँव से मुझे कम से कम पाँच सौ की आशा है।`[२]

होरी को भी शगुन के पाँच रुपये देने है जिसकी चिन्ता होरी को सताती है --

` होरी ने अपना डण्डा उठाया और घर चला। शगुन के रुपये कहाँ से आयेंगे, यही चिन्ता उसके सिर पर सवार थी।`[३]

` प्रेमचंदजी ने यह दिखाया है कि जमींदार और किसान का सामाजिक सम्बन्ध असमानता पर आधारित है। इसमें जमींदार श्रेष्ठ है कि भावना काम कर रही है। जमींदार के घर पर होनेवाले प्रत्येक उत्सव में किसान उपस्थित होता है लेकिन किसान के घर पर होने वाले उत्सव में जमींदार कभी भी उपस्थित नहीं होता। प्रेमचंदजी ने `गोदान` में ऐसी एक भी घटना का वर्णन नहीं किया जहाँ जमींदार किसान के घर उत्सव में शामील हुआ हो। इसके साथ ही जमींदार के घर पर भी किसान दूसरे दर्जे का मेहमान होता है। किसान को घर का आदमी समझकर बेगार

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१४ - सरस्वती प्रेस, २४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ पृ.१६ - वही -

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६ -- वही --

ली जाती है और नीचले वर्ग का समझाकर बाहर बैठाया जाता है।[१] `गोदान' का अन्यायी शोषक जमींदार अत्यंत ढोंगी है। वह बाहर से तो नीति और धर्म की बातें करता है लेकिन एक जगह मजदूरों से बेगार कराने के प्रसंग में वह बडी सख्ती से पेश आता है।

किसान और जमींदार के सम्बन्ध पर डॉ.कमला गुप्ता ने अच्छा प्रकाश डाला है --

`कृषकों और जमींदारों के पारस्परिक सम्बन्धों ने कृषकों के जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी है। जमींदारी प्रथा ने भूमि का ऐसा असंतुलित विभाजन कर दिया है कि किसी के पास हजारों बीघे खेत है और कोई खेत हीन। एक ओर सुख सुविधाओं का अम्बार है दूसरी ओर दुखों और असुविधाओं का मर्मांतक चीत्कार। सामाजिक यथार्थ यह है कि यह जमीन सब की है, सभी इसके मालिक है और सच्चे अर्थों में तो इसका मालिक ईश्वर है जिसने इसे बनाया है या किसान है, जो इसकी सेवा करता है। किन्तु राजा ने जमीन को जमीदारों के बीच बांटकर ऐसे एजेंट उत्पन्न किये हैं, जो किसानों से सरकारी कर तो वसूलते है, अपने भोग विलास के लिए उनसे तरह-तरह की सेवाएं लेते है और पैसे उगाहते है।'[२]

इस तरह से `गोदान' में यह दिखाई देता है कि जमींदार और किसान का सम्बन्ध मालिक और सेवक जैसा है। एक स्थान पर इस सम्बन्ध को और स्पष्ट किया गया है --

`भारतीय किसान की जीविका खेती है। इस खेती जीवि किसान को चारों ओर से शोषक शक्तियाँ घेरे हुए हैं। किसान का सीधा सम्बन्ध जमींदार से था। जमींदार-किसान से इतना ज्यादा पैसा वसूल करता था कि वह स्वयं ठाठ-बाट से

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१४-२१५
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर दिल्ली-७,
प्रथम संस्करण-१९८२

२ डॉ.कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ.२७०
अभिनव प्रकाशन २१-ए,दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

रह सके और विदेशी सरकार को माल गुजारी भी दे सके।'[१]

किसान - महाजन —

जमींदारों के समान महाजन का कोई सामाजिक वर्ग नहीं। सामान्य किसान वर्ग पर उसका आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसे प्रभाव होता है लेकिन सामाजिक जीवन में उसकी विशिष्ट भूमिका नहीं होती। कोई भी महाजन अपने सही रूपमें किसी भी सामाजिक कार्य में भाग लेता हुआ 'गोदान' में दिखायी नहीं देता। 'गोदान' में प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि किसानों से महाजनों का आर्थिक सम्बन्ध होता है, लेकिन सामाजिक सम्बन्ध नहीं होता। एक गाँव में रहने मात्र से जो आपस में भाई-चारे का भाव जागृत होता है, उसी कारण वे गाँव के सामाजिक जीवन में हिस्सा लेते हैं —

'महाजनी सभ्यता का बृहद रूप शहरों में था मगर वह छोटे छोटे साहूकारों और ऋण दाताओं के रूपमें देहातों में भी विराजमान था।'[२]

कभी-कभी ऐसा दिखायी देता है कि महाजन और किसान एक ही जाति के हों तो उस जाति गत सम्बन्ध के अनुरूप व्यवहार होता है। 'गोदान' में होरी महाजन दुलारी सहुआइन से भाभी का सम्बन्ध जोडकर मजाक कर लेता है —

'सामने से दुलारी सहुआइन, गुलाबी साडी पहने चली आ रही थी। पाँव में मोटे चाँदी के कडे थे, गले में मोटी सोने की हँसली, चेहरा सूखा हुआ, पर दिल हरा। एक समय था, जब होरी खेत-खलिहान में उसे छेडा करता था। वह भाभी थी, होरी देवर था, इस नाते दोनों में विनोद रहता था।'[३]

---

१ संपादक : दयानंद पांडेय : प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि -पृ.८८
भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९८२

२ वही (संपादक - दयानंद पांडेय : प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि - पृ.८८
भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्र.सं.१९८२)

३ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२०४, सरस्वती प्रेस, २ ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - २

प्रेमचंदजी के समय में महाजनी सभ्यता बल पकड रही थी । प्रेमचंदजी ने `गोदान' में कहा है कि जिसके पास कुछ धन आ जाता है वह महाजन बन बैठता है । डॉ. कमला गुप्ता ने महाजनों पर प्रकाश डालते हुए कहा है --

`महाजनों से तात्पर्य ऐसे धनिक वर्ग के लोगों से हैं, जो धन के आधार पर उच्च वर्ग की श्रेणी में आता है । उनका लेन-देन ही जिसका व्यापार है, धन से धन कमाने की प्रक्रिया व्दारा जो पूँजीवाद को प्रश्रय देता है । सामाजिक विकास की दृष्टि से भारत का बीसवीं सताब्दी का इतिहास पूँजीवाद का विकास का रहा है । सामंतवादी व्यवस्था जर्जर हो रही थी, पूँजीवाद उसका स्थान ले रहा था । गाँवों में भी महाजनों का प्रभुत्व बढ गया था ।'[१]

दातादीन को ब्राह्मण मानकर होरी उसे जजमानी देता रहता है । दातादीन ब्राह्मण होनेपर भी सूद पर पैसे देता है । दातादीन ब्राह्मण महाजन होने के कारण होरी उसका संपूर्ण कर्जा चुकता करना चाहता है । दातादीन का किसानों से दोहरा नाता है । एक स्थान पर होरी अपने पुत्र से कहता है --

`नीति हाथ से न छोडना चाहिए बेटा, अपनी - अपनी करनी अपने साथ है । हमने जिस ब्याज पर रुपए लिए, वह तो देने ही पडेंगे । फिर ब्राह्मण ठहरे । इनका पैसा हमें पचेगा ?'[२]

इस तरह से `गोदान' में यह दिखायी देता है कि किसान के सामाजिक जीवन में महाजन बिरादरी का सदस्य, कुटुम्ब का सदस्य या गाँव के आम निवासी के रुपमें हिस्सा लेता है लेकिन महाजन के रुप में कभी हिस्सा नहीं लेता ।

किसान - बुध्दिजीवि --

`इस सम्बन्ध में बुध्दिजीवीयों ने कुछ काम जरुर कर दिये है । प्रेमचंदजी ने

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ.२७६ - २७७
अभिनव प्रकाशन २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१८४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

बुध्दिजीवियों और किसानों के बनते हुए सामाजिक तथा राजनीतिक सम्बन्धों का चित्रण जगह-जगह किया है। 'गोदान' में मेहता और मालती गाँव में जाते है और एक दिन होरी के यहाँ ठहरते है। मेहता किसानों से खेती के बारे में बातचीत करते हैं --[१]

'इधर कभी - कभी दोनों देहातों की ओर चले जाते थे और किसानों के साथ दो-चार घण्टे रहकर उनके झोपडों में रात काटकर, और उन्हीं-का सा भोजन करके, अपने को धन्य समझते थे। एक दिन वे सेमरी पहुँच गये और घूमते-घामते बेलारी जा निकले। होरी द्वार पर बैठा चिलम पी रहा था कि मालती और मेहता आकर खडे हो गए।'[२]

बुध्दिजीवि वर्ग - अहंभाव से मरा नहीं हैं। उनमें मानवीय सम्बन्ध भी मरे हुए हैं —

'प्रोफेसर मेहता और मालती मध्यवर्ग की नयी निर्मितियाँ हैं जो अमरकांत की तरह ढुलमुल तथा अहंपूजक नहीं हैं बल्कि शोषकों से घृणा एवं जनता से प्यार करती हैं। वे बुध्दिजीवि हैं, सही तथा खरे सिध्दान्तवादी हैं, तथापि वे राष्ट्रीय जीवन के महाभारत में सक्रिय नहीं हो पाये हैं। ये उपन्यास के रंगे सियारों की वास्तविकता के उद्घाटन के लिए स्वांग, व्यंग्य, चिंतन तर्क आदि के कर्मिक मासिक कौशलों का इस्तेमाल करते हैं।'[३]

---

१ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१५-२१६ - वाणी प्रकाशन, दिल्ली -७

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२५५ - सरस्वती प्रेस, २१४३ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ रमेश कुंतल मेघ : वाग्मी हो, लो। पृ.७६ पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, चौडा रास्ता, जयपुर-३, प्रथम संस्करण १९८४

ऐसे आदर्शवादी और सामाजिक कार्यकर्ता गाँव में जाकर किसानों के बीच भाषण देते हैं, सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं और उन्हें खेती तथा स्वास्थ्य का निर्देश देते है --

` प्रेमचंदजी ने मेहता, मिस डॉ.मालती, मिर्जा खुशेंद, पंडित ओंकारनाथ, गोविन्दी खन्ना, रुद्रपाल आदि पात्रों के व्दारा ग्रामीण और शहरी जन-जीवन में सुधार की आवश्यकता स्पष्ट की है। मेहता दर्शन के विद्यापीठ - प्राध्यापक है और उनके मन में गरीबों के प्रति असीम प्रेम और सहानुभूति है। किसानों, मजदूरों, नारियों, बच्चों आदि के सुख समृध्दि के लिये वे प्रयत्नशील है। मिस मालती के मन में गरीबों की सेवा करने का भाव उन्हीं के कारण विशेष रुप से प्रभावी बना।`[१]

मालती की मनोवृत्ति में यह परिवर्तन उसके सामने भारतीय जन जीवन की यथार्थता को प्रकट कर देता है। अपनी भावनाओं में इसी मूलभूत परिवर्तन के कारण एक बार वह मेहता से कहती है कि --

` अभी तक तुम्हारा जीवन यज्ञ था, जिसमें स्वार्थ के लिए बहुत थोडा स्थान था। मैं उसको नीचे की ओर ले जाऊँगी। संसार को तुम-जैसे साधकों की जरुरत है, जो अपनेपन को इतना फैला दे कि सारा संसार अपना हो जाए। संसार में अन्याय की, आतंक की, भय की दुहाई मची हुई है। अन्धविश्वास का, कपट-धर्म का, स्वार्थ का प्रकोप छाया हुआ है। तुमने वह आर्त-पुकार सुनी है। तुम भी न सुनोगे, तो सुननेवाले कहाँ से आयेंगे ? और असत्य प्राणियों की तरह तुम भी उसकी ओर से अपने कान नहीं बन्द कर सकते। तुम्हें वह भोजन भार हो जायगा। अपनी विद्या और बुध्दि को, अपनी जागी हुई मानवता को और भी उत्साह और जोर के साथ उसी रास्ते पर ले जाओ। मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगी। अपने

---

१ डॉ.ह.के.कडवे : हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति - पृ.२१७
अन्नपूर्णा प्रकाशन, १०६।१५४, गांधीनगर, कानपुर-१२
प्रथम संस्करण १९७८

जीवन के साथ मेरा जीवन भी सार्थक कर दो।'[१]

प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में यह दिखलाया है कि स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रभाव से और बुध्दिजीवियों की भूमिका से गाँव में किसानों के आपसी सामाजिक सम्बन्धों में भी बदलाव आ रहा है। गोबर घर से भागकर शहर जाता है, वहाँ रहने पर स्वाधीनता आन्दोलन से प्रभावित होता है, उसमें कुछ शहरी परिवर्तन आता है —

'उसने अँग्रेजी फैशन के बाल कटवा लिए हैं, महीन धोती और पम्प-शू पहनता है। एक लाल ऊनी चादर खरीद ली और पान-सिगरेट का शौकीन हो गया है। समाजों में आने-जाने से उसे कुछ-कुछ राजनीतिक ज्ञान भी हो चला है। राष्ट्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है। सामाजिक रूढ़ियों की प्रतिष्ठा और लोक-निन्दा का भय अब उसमें बहुत कम रह गया है। आये दिन पंचायतों ने उसे निस्संकोच बना दिया है। जिस बात के पीछे वह यहाँ घर से दूर, मुँह छिपाए पड़ा हुआ है, उसी तरह की, बल्कि उससे भी कहीं निन्दास्पद बातें यहाँ नित्य हुआ करती हैं, और कोई भागता नहीं। फिर वहीं क्यों इतना डरे और मुँह चुराए।'[२]

गोबर शहर में मेहता और मालती के सम्पर्क में आता है। मेहता और मालती को गोबर, झुनिया तथा गोबर का बच्चा आदि से उनका विशेष प्रेम सम्बन्ध रहा। गोबर के बच्चे को चेचक से बचाने का सारा श्रेय मालती को है। इस तरह प्रेमचंदजी ने किसान बुध्दिजीवि के इस सम्बन्ध को पर्याप्त महत्व दिया है।

किसानों के आपसी सम्बन्ध —

प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि किसानों के सामाजिक सम्बन्ध बहुत कम लोगों से होते हैं। एक तो किसान शारीरिक रूप से राष्ट्रीय जीवन से अलग दूर

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२८३-२८४ - सरस्वती प्रेस, ११४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

२ वही (प्रेमचंद : गोदान - पृ.१६८)

गांवों में रहते हैं। साथ ही साथ यातायात और सम्प्रेषण के आधुनिक साधनों का अभाव होने से वह नयी विचार धारा तथा जानकारी से दूर रहता है। प्रेमचंदजी ने `गोदान' में किसानों को आवागमन के आधुनिक साधनों से दूर रखा है। किसान रेल, बस आदि साधनों का दैनिक उपयोग नहीं करते। वे या तो पैदल चलते हैं, या फिर बैलगाडी से सफर करते हैं।

`गोदान' में नायक होरी बेलारी में रहता है और रायसाहब अमरपालसिंह सेमरी में रहते है। ये दोनों गाँव अवध प्रांत के हैं और इनमें पाँच मील का अन्तर है। होरी रायसाहब के यहाँ पैदल ही चला जाता है --

`होरी मण्डप में खडा सोच रहा था कि अपने आने की सूचना कैसे दे कि सहसा रायसाहब उधर ही आ निकले और उसे देखते ही बोले - अरे ! तू आ गया होरी, मैं तो तुझे बुलानेवाला था।'[१]

`गोदान' का किसान निरक्षर है। बाहरी दुनिया का ज्ञान उसे अन्य लोगों व्दारा मिलता है। इस सम्बन्ध में डॉ.रामबक्ष ने विस्तार से कहा है --

`गाँव में शिक्षित व्यक्ति या तो सरकारी कर्मचारी होते हैं, या फिर पंडित और सूदखोर महाजन। किसान ठीक से हिसाब करना भी नहीं जानते और इस कारण भी उन्हें पटवारी और महाजन का शिकार होना पडता है। उन सब कारणों से किसानों की दुनिया की भौगोलिक और सामाजिक जानकारी बहुत सीमित होती है। उन्हें ज्यादा से ज्यादा अपने जिले की जानकारी होती हैं, जहाँ या तो उनकी रिश्तेदारी होती है या कचहरी और व्यापारिक कामों के लिए नजदीक के बडे कस्बे में जाना होता है। अक्सर किसान नजदीक के गाँवों में अपने बच्चों की शादियाँ करता है, ताकि आने-जाने में अधिक असुविधा न हो।'[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३ - सरस्वती प्रेस, २४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -१२

२ डॉ.राम बक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१७ वाणी प्रकाशन, ६१ एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण १९८२

भारतीय किसान के सामाजिक जीवन की अपनी लम्बी परंपरा रही है। राज्य व्यवस्था के दबाव से उत्पन्न व्दन्व्द, तनाव और संघर्ष की अभिव्यक्ति प्रेमचंदजी की रचनाओं में हुई है —

' गोदान में उन्होंने केंद्र में रखा गांव के अभाव ग्रस्त किसान को। इस लिए इस उपन्यास में 'गांव' का समूचा बाहरी स्वरुप है और भीतरी परिवेश में गांव के व्यक्तियों के पारस्पारिक संबंध वर्गों के संबंध अभाव और उल्लास की संवेदनाएँ, संघर्ष की अटूट प्रक्रिया, रिसरिस कर टूटते हुए मूल्य तथा परत दर परत उभरती हुई यातनाएँ है।'[१]

किसान अनपढ होता है। उसे पढे - लिखे लोग फँसाते है। महाजन से किसान कर्जा लेते हैं परंतु उसे रसीद नहीं देते। सूद देने पर भी कर्जा ज्यों का त्यों बना रहता है। 'गोदान' में मंगरुशाह से होरी ५० रुपये कर्जा लेता है, जो दस वर्ष में ३०० रुपये होता है। मंगरुशाह उसे डाँटते हुए रुपये माँगता है तो होरी का भाई शोभा मसखरा है, उसकी मसखरी करता है। इससे स्पष्ट होता है कि अनपढ किसान भी अलग होनेपर संकट के समय अपने भाई का साथ देता है —

' पहले-पहल कितने रुपये दिये थे तुमने ? पचास ही तो।'
' कितने दिन हुए, यह भी तो देखो '
' पाँच-छः साल हुए होंगे ? '
' दस साल हो गए पूरे, ग्यारहवाँ जा रहा है। '
' पचास रुपये के तीन सौ रुपये लेते तुम्हें जरा भी सरम नहीं आती। '
' सरम कैसी, रुपये दिये हैं कि खैरात माँगते हैं।'[२]

किसान राष्ट्रीय जीवन प्रवाह से अलग रहता है इसीकारण वह राष्ट्रीय स्थिति से परिचित नहीं होता। बाहरी समाज का प्रभाव इस संबंध से उसपर पडता

---

१ संपादक : दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि-पृ.८८ भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्र.सं.१९८२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१५४ - सरस्वती प्रेस २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

है लेकिन किसान उससे सजग नहीं होते । 'गोदान' में गोबर भागकर लखनऊ जाता है और वहाँ रहकर वह राष्ट्रीय बातों को ज्ञात कर लेता है। राष्ट्रीयता से प्रभावित होता है। अधिकार के लिए लडता है परंतु परंपरावादी किसान ऐसा करने से डरता है, यह बात डॉ.रामबक्ष ने स्पष्ट कर दी है --

' किसान अपनी जीवन-पध्दति के कारण परंपरागत रुप में ही जीवन जीना चाहता है। वह वही कार्य करना चाहता है, जो अब तक होता आया है। उसे किसी नये कार्य करने में बाप-दादों का नाम डूब जाने का खतरा लगता है। इसी कारण किसान पुराणपंथी होता है। लेकिन समकालीन समाज (प्रेमचंद कालीन) में उस पर आर्थिक दबाव इतने ज्यादा पड रहे हैं कि वह परंपराओं का पालन करने में अपने को असमर्थ पाता है,फलत: एक विशेष प्रकार का अपराध-बोध और पराजय की चेतना उसके व्यक्तित्व का अंग बनती जाती है। होरी का चरित्र इस दृष्टिसे द्रष्टव्य है।'[१]

'गोदान' में गोबर दातादीन को सत्तर रुपये से ज्यादा रुपये देने के लिए तैयार नहीं बल्कि होरी के पेट में परंपरागत धर्म की क्रान्ति मच जाती है --

' अगर ठाकुर या बनिये के रुपए होते,तो उसे ज्यादा चिन्ता न होती , लेकिन ब्राह्मण के रुपए। उसकी एक पाई भी दब गई, तो हड्डी तोडकर निकलेगी। भगवान न करें कि ब्राह्मण का कोप किसी पर गिरे। बंस में कोई चिल्लू भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलानेवाला भी नहीं रहता।'[२]

होरी जीवन के अंतिम दिनों में आर्थिक दबावों के कारण अपनी बेटी रुपा को दो सौ रुपये में बेच देता है और अधेड व्यक्ति रामसेवक से रुपये लेकर उससे शादी कर देता है। आर्थिक दबाव और परंपरागत जीवन मूल्यों का संघर्ष होरी के जीवन में लगातर मिलता है।

' होरी ने रुपए लिये तो उसका हाथ काँप रहा था, उसका सिर ऊपर न उठ

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१७-२१८ वाणी प्रकाशन,६१ एफ,कमलानगर,दिल्ली-७ प्रथम संस्करण-१९८२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१८४ - सरस्वती प्रेस २१४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

सका, मुँह से एक शब्द न निकला, जैसे अपमान के अथाह गढे में गिर पडा है और गिरता चला जाता है। आज तीस साल तक जीवन से लडते रहने के बाद वह परास्त हुआ है।'[१]

होरी दो-चार रुपयों के लालच में दमडी बसोर से मिलकर बाँस सस्ते में बेचने के लिए राजी हो जाता है —

' चौधरी ने होरी का आसन पाकर चाबुक जमाया हमारा तुम्हारा पुराना भाईचारा है, महतो, ऐसी बात है भला , लेकिन बात यह है कि ईमान आदमी बेचता है, तो किसी लालच से। बीस रुपए नहीं, मैं पन्द्रह रुपए कहूँगा, लेकिन जो बीस रुपए के दाम लो।'[२]

फिर भी परंपरा का पालन करने की भावना होरी में अधिक है। हीरा होरी की गाय को माहुर देकर कहीं भाग जाता है। थानेदार गाँव में हकीकत जानने आता है और हीरा के घर की तलाशी लेना चाहता है। धनिया भी हीरा को सजा दिलवाना चाहती है। इसमें होरी अपने भाई का और इसलिए अपना अपमान समझता है। और थानेदार व्दारा तलाशी रुकवाने के लिए तीस रुपये रिश्वत देने के लिए तैयार हो जाता है —

' तलाशी। होरी की साँस तले-ऊपर होने लगी। उसके भाई हीरा के घर की तलाशी होगी और हीरा घर में नहीं है। और फिर होरी के जीते-जी, उसके देखते यह तलाशी न होने पायगी '[३]

' पटेश्वरी ने झिंगुरी से कहा, झिंगुरी ने होरी को इशारे से बुलाया, अपने घर ले गए, तीस रुपए गिनकर उसके हवाले किए और एहसान से दबाते हुए बोले — आज ही कागद लिखा लेना। तुम्हारा मुँह देखकर रुपए दे रहा हूँ, तुम्हारी मलमंसी पर।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१९५ - सरस्वती प्रेस २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ वही प्रेमचंद - गोदान - पृ.२६ - सरस्वती प्रेस २।४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ वही प्रेमचंद - गोदान - पृ.९४ - — वही —

होरी ने रुपए लिये और अंगोछे के कोर में बाँधे प्रसन्न-मुख आकर दारोगाजी की ओर चला।'[१]

इतना ही नहीं, हीरा जब घर से भाग जाता है, तो उसकी पत्नी पुनिया की खेती भी होरी ही करता है —

'सावन में धान की रोपाई की ऐसी धूम रही कि मजूर न मिले और होरी अपने खेतों में धान न रोप सका, लेकिन पुनिया के खेतों में कैसे न रोपाई होती ? होरी ने पहर रात-रात तक काम करके उसके धान रोपे। अब होरी ही तो उसका रक्षक है। अगर पुनिया को कोई कष्ट हुआ, तो दुनिया उसी को हँसेगी। नतीजा यह हुआ कि होरी की खरीफ की फसल में बहुत थोडा अनाज मिला, और पुनिया के बखार में धान रखने की जगह न रही।'[२]

'गोदान' के रचना काल के समय भारत पर अंग्रेजों का राज था। अंग्रेज भारत पर आर्थिक शोषण के लिए राज्य करते थे। अंग्रेजों का प्रमुख उद्देश्य था धन कमाना। इसी कारण धन का मूल्य बढ गया था। इसी धन के कारण ही किसानों के संबंध में अंतर आया हुआ दिखायी देता है। इसे डॉ.रामबक्ष ने स्पष्ट कर दिया है —

'प्रेमचंद ने समकालीन समाज में पैसे के बढते हुए प्रभाव की आलोचना की है। उन्होंने जगह जगह यह दिखाया है कि धन मनुष्य की मनुष्यता को खत्म कर रहा है, उसे हृदयशून्य और संवेदन हीन बना रहा है। धन प्रेमचंदजी के लिए क्रूरता का प्रतीक है। इसलिए उन्होंने गरीब, मूर्ख और असभ्य कहे जानेवाले व्यक्तियों में निहित मानवीयता को उजागर किया है। छल-प्रपंच, धोखा-धडी, ईर्ष्या, द्वेष आदि सामाजिक जीवन की जो विषमताएँ हैं, उनके मूल में कहीं न कहीं आर्थिक असमानता ही है। प्रेमचंद ने दिखाया है कि किसान के परंपरागत जीवन के टूटने का बहुत बडा

---

१. प्रेमचंद - गोदान - पृ.९६ - सरस्वती प्रेस २४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, -२

२. वही — प्रेमचंद - गोदान - पृ.९८ - — वही —

कारण रुपये का बढता हुआ मूल्य है।'[१]

किसान और शहर —

प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में दिखाया है कि शहर से किसानों का कोई भी सामाजिक सम्बन्ध नहीं होता लेकिन किसानों का शहर से आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध होता हैं। फिर भी यह सम्बन्ध सीधा नहीं होता अपितु किसी न किसी के माध्यम से होता है। 'गोदान' में शक्कर मिल के एजेंट शहर से गाँव आकर किसानों की ऊख खरीदते हैं। 'गोदान' में एक स्थानपर यह दिखाया है कि शहर के कुछ लोग गाँवों में शिकार के बहाने आते हैं। मेहता और मालती गांव में सुधार करने की दृष्टिसे होरी के गाँव आते हैं और एक दिन रहते भी हैं परंतु यह सम्बन्ध अस्थायी है।

प्रेमचंदजी ने गाँव और शहर का सम्बन्ध स्थापित किया है। इसे डॉ.कमलकिशोर गोयनका स्पष्ट करते है —

'एक का एक रंगमंच लखनऊ शहर भी है जो बेलारी गाँव से केवल बीस कोस दूर है। इस निकटता के कारण ही गोबर बेलारी गाँव से भागकर लखनऊ शहर जा सका है और लेखक गाँव और शहर की भिन्न भिन्न परिस्थितियों एवं संघर्षों को चित्रित करने में सफल हो सका है।'[२]

किसान और शहर का सम्बन्ध बहुत कम आता है फिर भी किसान अपना स्थान तथा कार्य त्यागना नहीं चाहता परंतु नयी पीढी शहर की ओर आकृष्ट होती हैं —

'भारतीय ग्राम व्यवस्था के यही दो स्तंभ हैं किसान और जमींदार, जमींदार गाँव

---

१ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१८
वाणी प्रकाशन, ६१ एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ डॉ.कमलकिशोर गोयनका - प्रेमचंद अध्ययन की नयी दिशाएँ - पृ.१२९
साहित्य निधि सी-३८, ईस्ट कृष्णानगर,
दिल्ली-११, प्रथम संस्करण- १९८१

छोड़कर नगर में जा बसे हैं किन्तु किसान अपने खेत, बैल गाय का मोह छोड़कर प्राचीन परम्पराओं को तोड़कर गाँव से भागना नहीं चाहता। हाँ आनेवाली पीढ़ी (गोबर की) अवश्य यह समझ रही है कि गाँव के इन गिरते खँडहरों को संभालकर रखना असम्भव है, गाँव में रहकर इन खँडहरों की रक्षा के असफल प्रयत्नों में समय व्यर्थ करना बुध्दिमानी नहीं है।"[१]

गोबर घर से भागकर शहर चला जाता है। साल भर रहने के कारण उसमें शहरी परिवर्तन आ जाता है। अब वह ग्रामीण युवक नहीं रह गया है —

" उसने अँग्रेजी फैशन के बाल कटवा लिए है, महीन धोती और पम्प-शू पहनता है। एक लाल ऊनी चादर खरीद ली और पान-सिगरेट का शौकीन हो गया है। सभाओं में आने जाने से उसे कुछ-कुछ राजनीतिक ज्ञान भी हो चला है। राष्ट्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है। सामाजिक रूढ़ियों की प्रतिष्ठा और लोक-निन्दा का भय अब उसमें बहुत कम रह गया है। आये दिन पंचायतों ने उसे निस्संकोच बना दिया है। जिस बात के पीछे वह यहाँ घर से दूर, मुँह छिपाए पड़ा हुआ है, उसी तरह की, बल्कि उससे भी कहीं निन्दास्पद बातें यहाँ नित्य हुआ करती हैं, और कोई भागता नहीं। फिर वही क्यों इतना डरे और मुँह चुराए।"[२]

गोबर शहर से आकर कितना ही बदल गया है, इसे उससे माता-पिता भी महसूस करते है। वह शहर से आनेपर धर्म के प्रभुत्व से मुक्त हो गया है —

" गोबर शहर से नई स्पिरिट लेकर आया है। वह दातादीन से पंचों द्वारा डाँड के बहाने हजम किए गए डेढ़ सौ रुपए के दावे का जिक्र करता है और बिरादरी वालों को भी चुनौती देता है। गोबर के युवक साथी भी उसके स्वर में स्वर मिलाते

---

१ डॉ. ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्यायें - पृ.११८
जवाहर पुस्तकालय - सदर बाजार, मथुरा-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१६८ - सरस्वती प्रेस ३४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

है और पं.दातादीन को ' काले सांप ' की तरह समझाते है।'[१]

ग्रामीण किसान जीवन तथा नागरिक जीवन के सम्बन्ध को मेघजी इस तरह से स्पष्ट करते है --

' भारतीय जीवन के विभिन्न रुपों को वे ग्रामीण संस्कृति तथा लोक जीवन, नागरिक सभ्यता तथा शहरी जीवन की कसौटियों पर परखते हैं। इससे जो ' वैषम्य ' तथा ' तनाव ' उत्पन्न होता है - वह सामाजिक यथार्थवाद की उपयोगिता तथा ऐतिहासिकता को, तथा वर्गीय मनुष्य की दुर्बलता तथा क्षमता को महाकाव्यात्मक ढंग से विराटत्व प्रदान करता है।'[२]

गोबर शहर की संस्कृति से प्रभावित होने पर गाँव की संपूर्ण संस्कृति पर उसका प्रभाव नहीं के बराबर है। उसे लोग सम्मान की दृष्टिसे देखते है लेकिन उसके अनुसार जीवन जीने के लिए तैयार नहीं है। इसीतरह के विचार डॉ.सरोदे रखते है --

' प्रेमचंद गाँवों के प्रेमी थे। वे नहीं चाहते थे कि गाँवों के शांतिपूर्ण वातावरण में शहरी आपाधापी एवं हलचल आ जाये। उनकी दृष्टि में शहर अमीरों के निवास और क्रय-विक्रय के रंगस्थल है। प्रेमचंद भारत के गाँवों को वैसा ही रहने देना चाहते थे जैसे वे हैं। सच्चे अर्थो में गाँव और शहर की कथा कहनेवाला उपन्यास है ' गोदान '।'[३]

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.७२
(आम प्रकाशन, ३० बी, केवल पार्क एक्स्टेंशन, आजादपुर-दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण- १९८७)

२ रमेश कुंतल मेघ : वाग्मी हो लो। - पृ.७६
(पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, चौडा रास्ता, जयपुर-३, प्रथम संस्करण १९८४)

३ डॉ.पीताम्बर सरोदे - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६४, (अतुल प्रकाशन, १०७ २९५ ब्रह्मनगर, कानपुर-१२, संस्करण - जून १९८७)